किसान चेतना

राष्ट्रीय महाधिवेशन–हस्तिनापुर

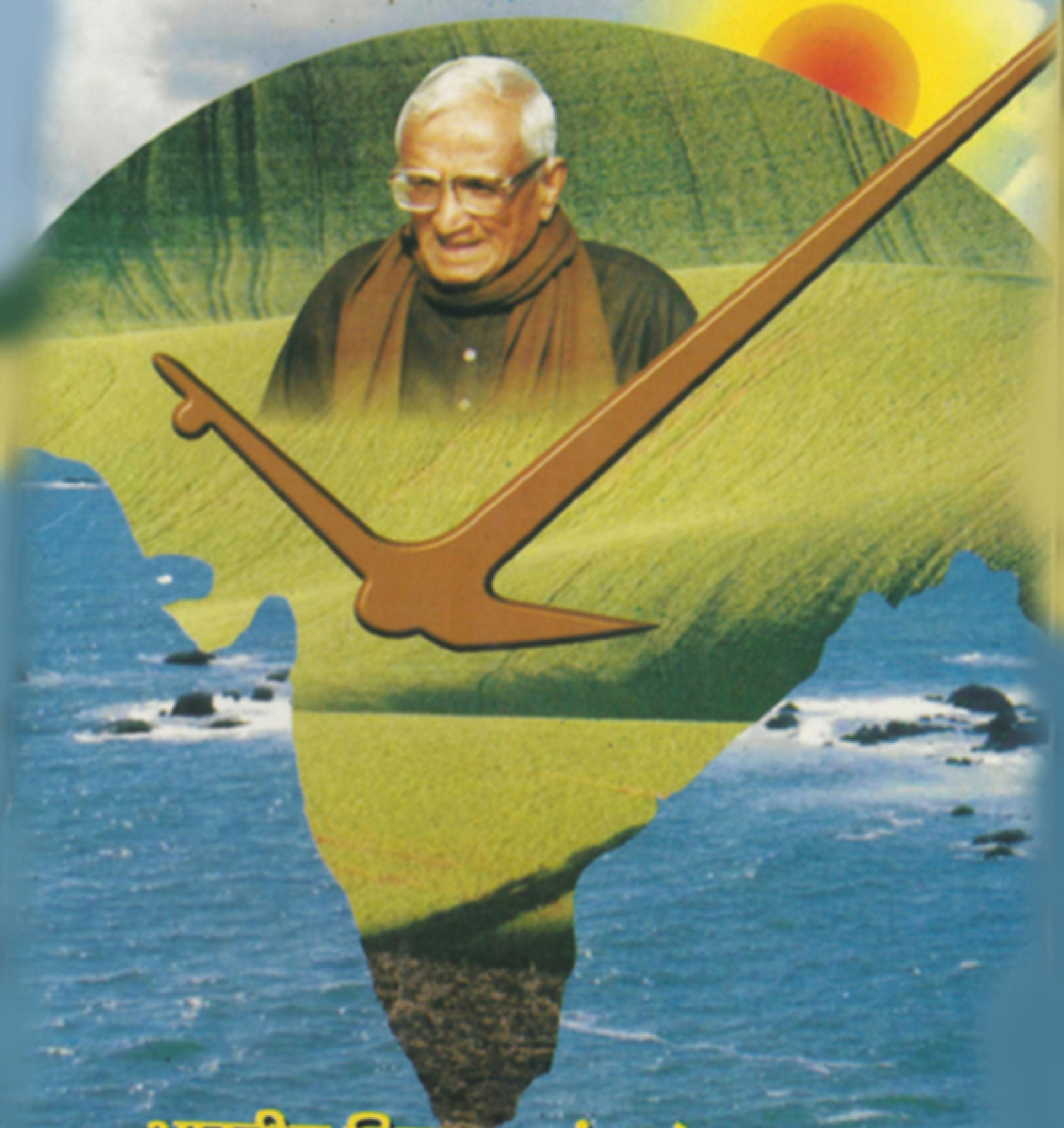

भारतीय किसान संघ–मेरठ प्रान्त

किसान चेतना

राष्ट्रीय महाधिवेशन-हस्तिनापुर

भारतीय किसान संघ- मेरठ प्रान्त

किसान

चेतना

भारतीय किसान संघ के राष्ट्रीय महाधिवेशन-हस्तिनापुर (२५-२७ फरवरी, २०००) में दिये गये भाषणों का संकलन।

संकलनकर्ता :

कृपाशंकर

मनोज

"केशव भवन" १०५, आर्यनगर

सूरजकुण्ड रोड़, मेरठ - २५०००१

सहयोग राशि

रुपये १०/-

प्रकाशन तिथि :

ज्येष्ठ कृष्ण नवमी, सम्वत् २०५७ युगाब्द ५१०२,

तद्नुसार २८ मई, २००० ई.

(सावरकर जयन्ती)

प्रकाशक :

भारतीय किसान संघ-मेरठ प्रान्त

"शंकर आश्रम" शिवाजी मार्ग, मेरठ-२५०००१, दूरभाष - ०१२१-६५३१७७, ६४०८८०

किसान शक्ति का प्रकटीकरण

मा० दत्तोपंत ठेंगड़ी

कुंवर जी भाई, आदरणीय गुमान मल जी, माननीय बाबू लाल जी, मा० मित्तल जी, मा० कोठारी जी, मंच पर आसीन अन्यान्य प्रमुख कार्यकर्तागण, किसानों के प्रति तथा भारतीय किसान संघ के प्रति जिन्होंने हमेशा ही आत्मीयता दिखाई है, ऐसे हमारे पत्रकार बन्धु और देश के कोने-कोने से आये किसान प्रतिनिधि बन्धुगण, भगिनीगण।

इस अधिवेशन का यह अन्तिम सत्र है। इस समय यहाँ बैठे हुए सब लोगों के मन में क्या भावनायें हैं, हम अपना मन टटोलकर देखें। जैसे आदरणीय गुमान मल जी ने कहा कि यह अधिवेशन ऐतिहासिक महत्त्वपूर्ण है। क्योंकि जैसा कल कहा गया कि हम ऐसे बिन्दु पर पहुंचे हैं जहाँ से एक लम्बी छलांग हम लगा सकते हैं। यह ऐतिहासिक महत्व का अधिवेशन है। इस अधिवेशन का यह अन्तिम सत्र है। इस समय हमारे मन में क्या विचार है? क्या भावना है? हम अपने ही हृदय से पूछें। एक तो दिखेगा क्योंकि सबके साथ औपचारिक बातें होती रहती हैं, सबके मन में विचार सबकी भावना ख्याल में आती है कि यहाँ आते समय बहुत कष्ट उठाना पड़ा, किन्तु यहाँ के वायुमण्डल के कारण सारे जो कष्ट थे, लोग भूल गये और बड़े आनन्द के साथ लोग रहे। यह एक बात ख्याल में आती है। आनन्द से साथ रहे इसका कारण भी था कि संख्या बहुत ज्यादा होते हुए भी और साधन हमेशा की तरह कम होते हुए भी यहाँ के कार्यकर्ताओं ने जो व्यवस्था में थे, जिसमें भारतीय किसान संघ के कार्यकर्ता तो थे ही, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ता भी थे, जिन्होंने इतनी उत्कृष्ट व्यवस्था रखी थी कि जितने कष्ट हमें आते समय हुए, हम वे सारे कष्ट भूल गये। साथ ही साथ जो तीन दिन हम इकट्ठा रहे। इकट्ठा रहने का एक आनन्द होता है। अब यह आखिरी सत्र है। हमें यहाँ से जाना पड़ेगा। एक-दूसरे से हम बिछुड़ जायेंगे। हमें आनन्द होता है यदि हम और अधिक समय तक एकत्रित रह सकते। अभी एक-दूसरे से बिछुड़ने का समय आ गया। इसके कारण कुछ दुःख हरेक के मन में है, मैं समझ रहा हूँ। वैसे हरेक के मन में दो परस्पर विरुद्ध भावनायें भारतीय किसान संघ के कार्यकर्ता के नाते हैं। एक आनन्द की भावना है। हम देख रहे हैं कि किस तरह अपना किसान संघ आगे बढ़ रहा है। काम चारों ओर

बढ़ रहा है। विनम्रता के साथ हम यह कहने की अवस्था में हैं कि वास्तविक रूप में अखिल भारतीय संगठन जिसको कहा जा सकता है, विभिन्न प्रदेशों में फैला हुआ ऐसा एकमात्र संगठन भारतीय किसान संघ है। इसके कारण आनन्द है, किन्तु चिन्ता भी है। घोर चिन्ता है। किसानों की हालत दिन प्रतिदिन बिगड़ती जा रही है, हमारे सामने हमेशा ही समस्या रही है। हम हमेशा कहते हैं कि किसानों के सामने कितनी समस्यायें हैं, इनकी गिनती नहीं की जा सकती। किसान का सम्बन्ध जिस-जिस चीज के साथ आता है, चाहे बिजली हो, पानी हो, खाद हो, बीज हो वह चीज उसके लिए समस्या बन जाती है और जिस व्यक्ति के साथ उसका सम्बन्ध आता है वह व्यक्ति भी उसके लिए समस्या बन जाता है। राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री से लेकर मण्डी समिति के चपरासी तक जिस किसी के साथ किसान का सम्बन्ध आता है वह उसके लिए समस्या बन जाता है। समस्यायें हमारे साथ हमेशा ही रही। उसके लिए हम संघर्ष करते रहे, लेकिन अब जहाँ एक तरह हमारी शक्ति किसान संघ के नाते बढ़ रही है वहीं किसान की हालत दिन-प्रतिदिन नीचे की ओर जा रही है। यहां तक हर प्रदेश में से वृत सुनाई देता है कि हर दिन कितने किसानों ने आत्महत्या कर ली है। कोई भी खुशी से आत्महत्या नहीं करता। जब देखता है कि खुद के परिवार की, पत्नी है, बच्चे हैं, इनको रोटी खिलाने के लिए पैसा अपने पास नहीं है, परिवार को जिन्दा रखने का कोई उपाय नहीं है तो विवश होकर लोग आत्महत्या करते हैं। हर प्रदेश में हर दिन किसानों की आत्महत्यायें हो रही हैं। इतनी गिरावट किसानों की स्थिति में आ रही है। इसके कारण घोर चिन्ता हरेक के मन में है। तो ये परस्पर विरुद्ध दो बाते हैं। एक तरफ किसान संघ आगे बढ़ रहा है, यह भी सही है जो आनन्द की बात है। दूसरी तरफ किसानों की हालत में इतनी गिरावट है, यह चिन्ता की बात है। ऐसा कुछ हो रहा है जैसे स्टेशन से एक ही स्थान से दो रेलगाड़ियां आगे चल रही हैं। एक पैसेंजर ट्रेन है, एक एक्सप्रेस मेल ट्रेन है। दोनों आगे बढ़ रही हैं। पैसेंजर ट्रेन भी आगे बढ़ रही है, एक्सप्रेस ट्रेन भी आगे बढ़ रही है। पैसेंजर ट्रेन प्रगति नहीं कर रही ऐसी बात नहीं है किन्तु एक्सप्रेस ट्रेन पैसेंजर ट्रेन की तुलना में कई गुना आगे बढ़ रही है। इसलिए पैसेंजर ट्रेन में बैठे लोग चिन्तित हैं कि हमारी प्रगति तो हो रही है लेकिन हमसे कई गुणा अधिक तेजी से एक्सप्रेस ट्रेन आगे बढ़ रही है। इसके कारण पैसेंजर को चिन्ता होती है। वैसे ही हम आगे बढ़ रहे हैं किन्तु किसान विरोधी तथा देश विरोधी शक्तियां हमारी तुलना में कई गुना अधिक तेजी से आगे बढ़

रही हैं। इसके कारण घोर चिन्ता हम सबके मन में है। ऐसी दो परस्पर विरोधी भावनायें यहां बैठे प्रत्येक बन्धु एवं भगिनी के मन में है। आप अपने मन को टटोलकर देखिये, आपके ख्याल में आयेगा कि हमारे सामने जो समस्यायें हैं, दो तरह की हैं। एक है राष्ट्रीय स्तर की, जिसका अधिक विवरण करने की आवश्यकता नहीं है। विवरण हो चुका है। प्रस्तावों के द्वारा हो चुका है, भाषणों के द्वारा हो चुका है। सारी दुनिया दो हिस्सों में बंटी हुई है, गोरे देश, गैर-गोरे देश। गोरे देश गैर-गोरे देशों को खाने के लिए आगे बढ़ रहे हैं। अपनी स्वतन्त्रता, अपनी सम्प्रभुता (सोवेरिन्टी), अपने उद्योग, अपनी कृषि इसको कैसे बचाना गोरे देशों के आक्रमण से, यह समस्या जैसे अन्य विकासशील देशों के नवस्वतन्त्र देशों के सामने है, हमारे सामने भी यह समस्या है और दूसरी ओर स्थानीय समस्यायें। किसान की किसान के नाते समस्यायें हैं। अलग-अलग विभागों में अलग-अलग समस्यायें हैं। वही फिर बातें बिजली खाद आदि, उनका निराकरण कैसे हो, ये जो अलग-अलग प्रकार हमारी समस्याओं के हैं हम अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का प्रश्न बाद में लेंगे। किन्तु किसान की किसान के नाते जो समस्यायें हैं उनको हल करने का अब तक जो प्रयास हुआ है १९४७ के पश्चात्, इसका इतिहास आप देखिये। तरह-तरह के लोगों ने प्रयास किये हैं। अलग-अलग विभागों में अलग-अलग संस्थायें खड़ी हुई। अलग-अलग नेताओं ने आन्दोलन किए। भारतीय किसान संघ ने भी किये। किन्तु यहाँ भी विनम्रतापूर्वक मैं यह कह सकता हूँ कि अन्य संगठनों के आन्दोलन में इतनी मात्रा में सफलता प्राप्त नहीं हो सकी, जबकि नेता बड़े थे संस्थायें बड़ी थी। किन्तु इतनी सफलता प्राप्त नहीं हो सकी। कारण क्या है? आन्दोलन होने के लिए सबसे पहले संगठन की ताकत चाहिए। हम ताकत बढ़ा रहे हैं, किन्तु दूसरी बात जो-जो आन्दोलन असफल रहे, उनका एक पक्ष मैं आपके ध्यान में लाना चाहता हूँ। आन्दोलनकारी लोगों ने अपनी समस्याओं के बारे में आम जनता को विश्वास में नहीं लिया। आम जनता को नहीं समझाया जिसे अंग्रेजी में कहते हैं पब्लिक रिलेशन्स, इसके कारण किसानों के, मजदूरों के आन्दोलनों के समय एक बड़ा अनपेक्षित, विचित्र दृश्य हर समय निर्माण हुआ। दृश्य क्या था? मांगें और आन्दोलन गरीब मजदूरों की, गरीब किसानों की और जनता में ज्यादातर लोग गरीब किन्तु यह होते हुए भी जब आन्दोलन हुए तो परन्तु वास्तव में परिस्थिति ऐसी होनी चाहिए थी कि सरकार एक तरफ और आम जनता गरीब किसानों के पक्ष में, आम जनता गरीब मजदूरों के पक्ष में यह दृश्य निर्माण होना

चाहिए था। लेकिन प्राय: यह दृश्य दिखाई दिया कि आम जनता सरकार के पक्ष में। एक तरफ सरकार और आम जनता और दूसरी तरफ आन्दोलन करने वाले किसान और मजदूर। आम जनता की सहानुभूति का प्रयास अभी तक नहीं हुआ यह असफलता का एक कारण रहा है। दूसरा कारण सरकारी मशीनरी, जिनके खिलाफ आन्दोलन करना पड़ता है, वो कैसी है। इस विषय में सम्यक ज्ञान, सम्यक जानकारी हम रखते नहीं हैं। हम मोटा शब्द उपयोग में लाते हैं सरकार। सरकार क्या है? सरकार के दो हिस्से हैं- एक है स्थायी सरकार, दूसरी है अस्थायी सरकार। स्थायी सरकार कौन सी है? १९४७ के पूर्व से ही जो अफसरशाही (ब्यूरोक्रेट्स) देश पर लगातार शासन करते आये हैं यह स्थायी सरकार है। चुनावों में चुने जाने वाले जो विविध दलों की सरकारें, विविध मंत्री होते हैं ये अस्थायी (टेम्परेरी) सरकारें हैं। आने-जाने वाली सरकारें हैं। ये हमेशा बदलती रहती हैं। इसके कारण एक विचित्र परिस्थिति निर्माण होती है, जिसकी दखल लोग लेते नहीं। यह जो स्थायी सरकार के अफसर हैं, इन सबके मन में यह अंहकार है कि सालों तक हमने ही देश चलाया है, हम ही उच्च डिपार्टमेन्टों को जानते हैं। ये मिनिस्टर तो कल के हैं, ये क्या जानेगें? दु:ख की बात है कि आज के लोकतंत्र की स्थिति ऐसी है कि मिनिस्टरों को भी पूरा ध्यान केन्द्रित करते हुए अपना एडमिनिस्ट्रेशन, अपनी फाईल देखने का इतना समय नहीं मिलता। वो तो कहीं पब्लिक फंक्शन में चले गये, सार्वजनिक उद्घाटन में चले गये, विमोचन में चले गये, सत्कार में चले गये, स्वागत समारोह में चले गये। इसी में ज्यादा समय बीतता है। प्रत्यक्ष फाइल देखना, प्रत्यक्ष एडमिनिस्ट्रेशन की तरफ एकाग्रचित्त होना, इसका समय नहीं मिलता और इसके कारण जो कहेंगे वैसा उनको करना पड़ता है। मैं आपको बताना चाहता हूँ, जिम्मेवारी के साथ बताना चाहता हूँ कि प्राय: ब्यूरोक्रेट्स में से ज्यादातर लोग देशी पूंजीपतियों के द्वारा या विदेशी पूंजीपतियों के द्वारा खरीदे हुए हैं और इसलिए देशी पूंजीपतियों और विदेशी पूंजीपतियों की रक्षा और संवर्धन करने के लिए गरीब किसान-मजदूरों के खिलाफ काम करने की उनकी प्रवृत्ति है, वो करते आये हैं, लेकिन वे ये समझते हैं हम तो सुरक्षित हैं। हम तो अपने ओफिस में बैठे हुए सुरक्षित हैं। हम किसान विरोधी - मजदूर विरोधी नीतियाँ बनायेंगे, मिनिस्टरों के हाथ में देंगे, उनको वही नीतियां लेनी पड़ेगी। लोग गालियाँ देंगे तो मिनिस्टरों को देंगे। हम तो सुरक्षित हैं। यह सुरक्षितता का जो भाव है, उसके कारण वो जो चाहे सो गलत बातें करवा लेते हैं और इस ओर

आन्दोलन करने वालों का ध्यान नहीं। वास्तव में अब समय आ गया है कि ये गलत अधिकारी कौन हैं। यह खोजना। खोजने में असुविधा नहीं है, खोजे गये हैं। इनको संरक्षण देने का प्रयास चल रहा है। ये ठीक है लेकिन कौन गलत अधिकारी है, किसान विरोधी, मजदूर विरोधी, इनको खोजना, इनके नाम प्रकाशित करना और ऐसे अधिकारियों का सामाजिक बहिष्कार करना। कोई उनके यहां चाय पीने जायेगा नहीं, कोई उनको अपने यहां बुलायेगा नहीं। उनके साथ कोई व्यवहार नहीं करेगा। इससे उन पर दबाव पड़ेगा। आज तो वे समझते हैं हमारे लिए क्या है? असंतोष भड़क गया तो मिनिस्टरों को गाली मिलेगी। हम तो अपने कमरे में सुरक्षित बैठे हैं। यह सुरक्षितता नहीं रहनी चाहिए। इनका सामाजिक बहिष्कार होना चाहिए।

ये बातें हुई और हमारी निजी शक्ति बढ़ती गई तो मैं आपको आश्वासन देता हूँ कि थोड़े ही समय में हमारी परिस्थिति में परिवर्तन आयेगा। मैं क्रान्तिकारी शब्द का प्रयोग नहीं करता, क्योंकि बड़े-बड़े शब्दों का प्रयोग करना अपनी पद्धति नहीं है। किन्तु बहुत बड़ा परिवर्तन आयेगा। परिवर्तन का प्रभाव आपको एक बात से मिलेगा। आज भी हम सरकार के पास जाते हैं और अपना आवेदन पत्र देते हैं। मंत्री के पास जाते हैं, मुख्यमंत्री के पास जाते हैं, प्रधानमंत्री के पास जाते हैं। भारतीय किसान संघ की ओर से, भारतीय मजदूर संघ की ओर से आवेदन पत्र देते हैं। उस आवेदन पत्र को मांगपत्र कहा जाता है (चार्ट ऑफ डिमान्ड्स)। किन्तु हमारी शक्ति का विकास, जनता का सहयोग और नौकरशाही को नग्न करना यदि इतनी बातें हम कर सकें तो आने वाले पांच वर्ष में परिवर्तन होगा। पांच साल बाद हमारा शिष्ट मण्डल, हमारा प्रतिनिधि मण्डल जब मंत्री, मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री से मिलने जायेगा और आवेदनपत्र देगा तो उस आवेदन पत्र का नाम मांगपत्र नहीं रहेगा। किसानों की ओर से सरकार को याचना नहीं होगी बल्कि आदेश पत्र होगा कि सरकार को ये करना ही चाहिए। बाध्य होकर सरकार को करना पड़ेगा। इतना परिवर्तन पांच-छः वर्ष में हम ला सकते हैं। जहाँ तक हमारी स्थानीय समस्याएँ है उनके विषय में ये बातें ध्यान में रखनी चाहिए। यहां से जाने के पश्चात् तीनों दृष्टि से हमें प्रयास करना चाहिए। अब आती है देश को खत्म करने वाली अन्तर्राष्ट्रीय शक्तियां। मैं इस विषय को पूरा बताने की आवश्यकता नहीं समझता। सब जानते हैं विश्व व्यापार संघ के नाम से, वर्ल्ड बैंक के नाम से, इन्टरनेशनल मोनेटरी फण्ड के नाम से, अलग-अलग नाम से सभी गैर-गोरे देशों को खाने का षड्यन्त्र चल रहा है।

आश्चर्य की बात लगती है कि हमारे राज्यकर्ता उनके सामने झुक रहे हैं। जब सब देख सकते हैं कि ये देश खत्म होगा। हमारे देशी उद्योग यदि विदेशी पूंजी के लिए खोल दिये जायेंगे, कृषि के बारे में यदि जो उनके इरादे हैं, पूरे हो जायेंगे तो हमारे उद्योग, छोटे उद्योग, मजदूर-किसान बेकार हो जायेंगे। इसके लिए बहुत अर्थशास्त्र की जानकारी आवश्यक नहीं है। हमारे राज्यकर्ताओं को इस बात की क्या जानकारी नहीं है? यह कहना अन्याय होगा कि हमारे राज्यकर्ता देश के प्रति ईमानदार नहीं हैं। फिर भी ये ऐसा क्यों कर रहे हैं? यह जानने की आवश्यकता है। गोरे देशों के आक्रमण की नीति क्या है? रणनीति क्या है? उनका मनोविज्ञान क्या है? यह थोड़ा-सा समझने की आवश्यकता है। जो आक्रमण कर रहे है फ्रॉम द पोजिशन ऑफ स्ट्रेट नहीं कर रहे। वो बड़े बलवान हैं। इसलिए आक्रमण नहीं कर रहे हैं बल्कि उनके पैरों के नीचे से जमीन खिसक रही है। अमरीका की बात करते हैं। अमरीका की अर्थव्यवस्था चरमरा रही है। दूसरे देशों को खाने की इच्छा उनके मन में इसलिए हो रही है, क्योंकि यदि वे दूसरे देशों को नहीं खायेंगे तो उनकी अर्थव्यवस्था टूट जायेगी। वे स्वयं की अर्थव्यवस्था को बीस वर्ष तक सुरक्षित नहीं रख सकते। वे सोच रहे हैं कि अन्य देशों का शोषण करते हुए यदि हमने आर्थिक साम्राज्य फैलाया तो बीस साल के अन्दर-अन्दर जो अमेरिका टूटने वाला है शायद और तीस-चालीस वर्ष चल जाये। शक्ति की स्थिति से आक्रमण नहीं कर रहे बल्कि अपनी जान बचाने के लिए वे सोच रहे हैं कि हम दुनिया का शोषण करेंगे तो शायद कुछ समय तक और जिन्दा रह सकेंगे। उनकी रणनीति यह है कि गलत प्रचार, जनता को गुमराह करने वाला प्रचार सभी विकासशील देशों में करना और प्रचार के कारण सभी के मन में गलत धारणायें निर्माण करना। वास्तविक स्थिति यह है कि हमारा देश अपने ही पैरों पर खड़ा हो सकता है। कठिनाई होगी, हम गरीबी में से जा रहे हैं, लेकिन यदि देश के लिए त्याग का आह्वान किया तो लोग त्याग के लिए तैयार हो सकते हैं। देश स्वतन्त्र होते ही हमने अपने घरेलू बचत (डोमेस्टिक सेविंग्स) बढ़ाने के लिए यदि आह्वान किया होता तो गरीब लोगों ने भी उस बचत में अपना योगदान दिया होता, किन्तु ऐसा आह्वान नहीं हुआ। गोएबल्स ने कहा है कि एक झूठ को सौ बार बोलो तो वही लोगों को सच लगने लगता है। हिटलर ने कहा यदि झूठ ही बोलना है तो बहुत बड़ा झूठ बोलो कि लोग विश्वास ही नहीं कर सकते कि कोई आदमी इतना बड़ा झूठ बोल सकता है। इसलिए उस पर लोग विश्वास करेंगे। ऐसे ही झूठी बातें

इस देश में चल रही हैं और इसके कारण आत्मविश्वास का अभाव है। यदि अपनी शक्ति क्या है इसकी पहचान लोगों में आ गई तो कोई इस विदेशी और अमरीकी आक्रमण से डरेगा नहीं। उनके अन्दर ताकत नहीं है, किन्तु प्रचार के माध्यम से वे धौंस देना चाहते हैं और यह हमेशा उनकी नीति रही है। ताकत के कारण वे विजयी कभी नहीं हुए, किन्तु वे धौंस देते जायेंगे। धौंस देने का अर्थ आप समझते हैं? वास्तव में उनके अन्दर ताकत नही हैं, किन्तु धौंस देते हैं कि यदि आप हमारी शर्तें नहीं मानेंगे तो हम आपके ऊपर आर्थिक प्रतिबन्ध लगायेंगे। हम आपके देश को अलग-थलग कर देंगे। मैं आपको बताता हूँ कि गरीब होते हुए भी हम लोग देश के लिए त्याग कर सकते हैं। मान लीजिये अमेरिका ने हमारे ऊपर आर्थिक प्रतिबन्ध लगाये। लोगों में ऐसी धारणा हो गई कि अमेरिका हमारे खिलाफ जायेगा तो हमारा क्या होगा? अमेरिका के बगैर हम जिन्दा रहेंगे क्या? मैं आपको स्पष्ट बताना चाहता हूँ कि भारत को अमेरिका की जितनी आवश्यकता है, उससे ज्यादा आवश्यकता अमेरिका को भारत की है। यह बात ध्यान में रखनी चाहिए। यह दुनिया की नम्बर दो की बाजार की पैठ है। (नम्बर टू मार्केट ऑफ दी व्होल वर्ल्ड) और हमें धौंस देकर वे हमें दबायेंगे यह अलग बात है। हमारे राज्यकर्ता धौंस में आ जायेंगे अलग बात है। लेकिन यदि राज्यकर्ता धौंस में नहीं आते हैं और अमेरिका को स्पष्ट बताते हैं कि आप आर्थिक प्रतिबन्ध लगाईये हम देख लेंगे। कुछ कठिनाईयां आयेंगी। एक डेढ़ साल तक हम और भी अपनी कमर कस लें और थोड़े कष्ट बर्दाश्त कर लेंगे। हमें असुविधा, कष्ट सहने की आदत है। यह धीरज की लड़ाई है। हमारा धीरज कितना है, अमेरिका का धीरज कितना है? धीरज की लड़ाई में एक साल, डेढ़ साल, दो साल कष्ट बर्दाश्त करने की। हमारी ताकत है। दुनिया ने मान लिया है कि यदि सबसे ज्यादा धीरज रखने वाला कोई देश है तो वह भारत है। लेकिन दुनिया ने यह भी देखा है कि जिनके अन्दर कोई धीरज नहीं है, ऐसे सबसे कम धीरज वाले लोग अमेरिकन हैं। वो धौंस दे सकते हैं लेकिन स्वयं उपभोक्तावादी होने के कारण, आरामपरस्त होने के कारण, हमेशा अधिक उपभोग करने की आदत के कारण, उनके उपभोग में यदि किसी कारण कमी आ जाती है तो वे बर्दाश्त नहीं कर सकते और फिर पीछे हट जाते हैं। कहते हैं बड़ी ताकत है। लेकिन धीरज है क्या? वियतनाम जैसा छोटा देश था। जब वियतनाम में अमेरिकन फौज घुस गई, कहा गया अरे यह छोटा-सा देश अमेरिका के सामने क्या टिकेगा। छोटी जनसंख्या है, उनके पास अस्त्र-शस्त्र नहीं।

लेकिन धीरज के साथ लोगों ने प्रतिकार किया। अमेरिकन लोगों ने वियतनाम की लड़ाई का स्वागत किया। यह सोचकर कि लड़ाई जल्दी समाप्त हो जायेगी, हम विजयी होंगे। लेकिन जैसे वियतनाम के लोगों का प्रतिकार लम्बा होता गया, साल के बाद साल लड़ाई चलती रही। इतना स्ट्रेन बर्दाश्त करना अमेरिका के लोगों के स्वभाव में नहीं था। आखिर दस साल के अन्दर अमेरिका के लोगों ने राज्यकर्ताओं से मांग की कि वहां से शरणागत ही स्वीकार कीजिये। अपनी सेनायें निकाल लीजिये। और बेशर्मी के साथ वियतनाम जैसे छोटे देश के सामने पूंछ हिलाते हुए अमेरिकन सेना को वापिस जाना पड़ा। कारण क्या था? धीरज नहीं था। हमारी सबसे बड़ी ताकत हमारा धीरज है, अमेरिका की सबसे बड़ी दुर्बलता धीरज का अभाव है। इसके कारण यदि हिम्मत से हम समझ लें जैसे अब्दुल कलाम ने कहा कि हम प्रथम क्रमांक राष्ट्र के नाते अपने को २०२० तक ला सकते हैं यदि इच्छा शक्ति हमारे लोगों में रही तो। आज मैं आपको बताता हूँ कि आज जो धौंस दे रहे हैं कि हम आर्थिक प्रतिबन्ध लगायेंगे तुम लोग मर जाओगे, धीरज के साथ यदि हम प्रतिकार करते हैं, उल्टी स्थिति आ जायेगी। धौंस में राज्यकर्ता आ रहे हैं, यह अलग बात है। हमारे इधर एक कहानी है कि धौंस देने का मामला क्या होता है। एक पति-पत्नि थे। पति हमेशा पत्नि को धौंस देता था। पत्नी को पसन्द नहीं ऐसे कई कार्य वह पत्नि से करा लेता था। यदि वह करने के लिए इच्छुक नहीं तो हर समय उसको धौंस देता था। यदि यह काम नहीं करेगी मैं चला जाऊंगा और जब वह कहता था कि मैं चला जाऊंगा, पत्नि घबरा जाती थी और इच्छा न होते हुए भी हर कार्य करती थी। उसकी सहेलियों ने देख लिया। सहेलियों ने कहा कि यह तुम कब तक करोगी? जिन्दगी भर ऐसा ही चलेगा क्या? वह बोली, क्या करें मेरे पतिराज हैं, वे कहते हैं कि मैंने काम नहीं किया तो मैं चला जाऊंगा। सहेलियों ने कहा कि यह सिर्फ धौंस है। ये कहीं नहीं जाने वाले। पत्नी बोली कि यदि चले जायेंगे तो क्या होगा? सहेलियों ने कहा कि तुम प्रयोग करके देखो। यदि अब तुम्हारे पति ने कहा कि चला जाऊंगा, तो कहना चले जाओ। तुम्हारा सामान क्या देना है? मैं बांध देती हूँ। पत्नी बोली अबकी बार बोलूंगी। एक दिन पति महोदय आये। कुछ काम बताया, पत्नि को पसन्द नहीं था तो पति ने हमेशा की तरह धौंस दे दी कि यह काम करो नहीं तो मैं चला जाऊंगा। पत्नी ने शान्तचित्त से कहा कि आप चले जाइये। पति को अपेक्षा ही नहीं थी कि पत्नि चले जाने को कहेगी। वो असमंजस में आ गया तथा बोला कि मैं सचमुच

चला जाऊंगा। पत्नी बोली कि आप चले जाईये, मैं आपका सामान बांध देती हूँ। पत्नी ने पति के कपड़े बांधकर उसके हाथ में दे दिये। पति को बाहर जाना ही पड़ा। उसे आश्चर्य हुआ कि हमेशा तो हमारे धौंस में आती थी, चाहे जो काम हम करा लेते थे, किन्तु आज इसे क्या हो गया? किन्तु उसने सोचा, ठीक है कुछ समय बाद दिमाग ठिकाने आ जायेगा। एकदम गांव छोड़कर नहीं जाऊंगा। गांव में एक मन्दिर था, वहां उसने अपना सामान रख दिया और प्रतीक्षा करता रहा कि थोड़ी देर के बाद पत्नि को पश्चाताप होगा और वह आ जायेगी। एक दिन चला गया, पत्नी नहीं आई। अब ये बेचैन होने लगा। दूसरे दिन भी पत्नि नहीं आई। यह देखकर पति महोदय की बेचैनी बढ़ने लगी। तीसरे दिन तो वह अपना धैर्य खो बैठा। शाम को उसके घर के बैल, गाय, भैंस जब चारा खाकर वापस आने लगी तो उसने भैंस की पूंछ पकड़ ली और यह मन्त्र जपते-जपते वह आगे बढ़ा कि हे भैंस मुझे जबरदस्ती क्यों ले जा रही है। मैं तो घर वापिस नहीं जाना चाहता। यह कहते हुए वह घर में प्रवेश करने लगा। हमारे यहां उसका नाम संतोबा पवार कहा गया है। ये जो धौंस दे रहे हैं, चाहे क्लिंटन रहे चाहे अगले चुनाव में और कोई आ जाये, कोई भी अमेरिका का राष्ट्रपति रहे, आज जो धौंस दे रहा है हम यदि धौंस को न मानते हुए अपनी भूमिका पर दृढ़ रहे तो अमेरिका के राष्ट्रपति को हम संतोबा पवार की स्थिति में ला सकते हैं। यह बात आपको ध्यान में रखनी चाहिए। वास्तव में लोग नहीं समझते। गलत बात के प्रचार के शिकार बन जाते हैं। इसके कारण हमारी ताकत होते हुए भी हम अपने को दुर्बल समझते हैं। आखिर ताकत क्या है? हमें जिसका साक्षात्कार होता है वह हमारी ताकत है। हम लोग ताकत का साक्षात्कार ही नहीं करते, इसलिए गलत प्रचार के शिकार बन जाते हैं, केवल मानसिक दुर्बलता के कारण ऐसा होता है। मैंने एक उदाहरण सुना। विभाजन के समय लाहौर के पास एक गांव था। मेरे एक मित्र जो आज संघ के प्रचारक हैं, झण्डेवाला पर रहते हैं, वे उस गांव के थे। उन्होंने बचपन की आखों देखी घटना बताई। वहां के एक नवाब थे। पुराने जमाने में नवाब, राजा इनको शौक था कि अपने दरबार में अच्छे-अच्छे कलाकार को रखना। कोई तबले वाले को रखता था, कोई संगीत वाले को रखता था, कोई चित्रकार को रखता था। नवाब साहब को शौक था कि पंजाब का सबसे श्रेष्ठ पहलवान मेरे दरबार में रहे। पंजाब का श्रेष्ठ पहलवान उनके दरबार में था। उन्होंने घोषणा की थी कि कोई भी मेरे पहलवान के साथ कुश्ती खेलने को आ जाये। यदि वह

पहलवान मेरे पहलवान से जीतता है तो मैं अपना आधा राज्य उसे दे दूंगा। यदि वह हार जायेगा तो उसे पांच साल के लिए जेल जाना पड़ेगा। ऐसे चार-पांच लोग आये तथा पहलवान से हार गये। फिर किसी की हिम्मत ही नहीं होती थी, क्योंकि सभी जानते थे कि पांच साल के लिए जेल जाना पड़ेगा। एक दिन एक पिता पुत्र नजदीक के गांव से आये। धर्मशाला में वहां टिके। उनका पुत्र १९-२० वर्ष का दुबला-पतला, कभी व्यायाम नहीं किया, कभी अखाड़े में नहीं गया, कभी कुश्ती नहीं खेली और उसका पिता धर्मशाला में रहने लगे। लड़के के पिता नवाब से मिलने दरबार में गये और बोले कि मेरा लड़का आपकी चुनौती को स्वीकार करता है। नवाब साहब कहने लगे, सोच लो! पांच साल के लिए जेल जाना पड़ेगा। लड़के के पिता ने कहा, सोच लिया, मेरा लड़का पहलवान के साथ कुश्ती करेगा। नवाब साहब बोले कि कुश्ती का दिन तय कर लो। लड़के के पिता ने कहा कि यदि आप इन्साफ चाहते हैं तो मैं गरीब आदमी हूँ, अपने लड़के को खिला-पिला नहीं सकता। किन्तु आप अपने पहलवान को पूरी खुराक दे रहे हैं। बराबरी का मामला होना चाहिए। मेरे लड़के के लिए छः महीने की खुराक का पैसा दीजिये, उसके बाद कुश्ती तय करेंगे। छः महीने बाद कुश्ती खेलने की तारीख तय हुई। खुराक के नाते पैसा भी नवाब साहब ने दे दिया। ये दोनों पिता-पुत्र कुछ नहीं करते थे। खाते-पीते थे और सोते थे। ऐसे ही चार महीने बीत गये। इसके बाद नवाब के पहलवान के मन में एक बात आई कि यह कौन है जो मुझसे कुश्ती करना चाहता है। उसने अपने एक मित्र को जानकारी लेने के लिए धर्मशाला में भेजा। उसने देखा कि पहलवान से लड़ने वाला वह लड़का बहुत दुबला-पतला था। उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ। पहलवान के मित्र ने पूछा कि यही लड़का पहलवान से लड़ेगा? लड़के के पिता ने कहा कि हां यही लड़ेगा। पहलवान ने सोचा यह दुबला-पतला लड़का मुझसे लड़ने आयेगा, उसके पीछे जरूर कोई रहस्य होगा। पहलवान ने अपने मित्र से कहा, जरा पता लगाओ कि इसके पीछे क्या राज है? उसने और मित्रता बढ़ाई। लड़के के पिता जानते थे कि यह जो व्यक्ति हमसे जानकारी ले रहा है, यह पहलवान का मित्र है और रहस्य की खोज करने के लिए आ रहा है। पन्द्रह दिन पहले लड़के के पिता ने पहलवान के मित्र को कहा कि देखो, तुम मेरे मित्र हो, इसलिए मैं तुम्हें बताता हूँ, लेकिन किसी को यह बात मत बताना। यदि किसी बात को फैलाना हो तो आप किसी के कान में कोई बात बताईये तथा कहिये कि यह बात गुप्त है, किसी को भी मत बताना। बहुत जल्दी ही यह

बात चारों ओर फैल जायेगी। लड़के के पिता ने कहा कि यह गुप्त बात है, किसी को बताना नहीं। ऐसा है कि मैं अच्छी तरह से जानता हूँ कि मेरा लड़का दुबला-पतला है, लकड़ी पहलवान है, किन्तु मैं तुम्हें आश्वासन देता हूँ कि मेरा लड़का ही विजयी होगा। पहलवान के मित्र ने पूछा कि वह कैसे? तो लड़के का पिता बोला, देखो मैंने योग साधना की है, मुझे सिद्धि प्राप्त है। यह सिद्धि ऐसी है कि कुश्ती के समय पहले हाथ से हाथ मिलना पड़ता है। जो कोई मेरे लड़के से हाथ मिलायेगा, हाथ से हाथ लगते ही वह बेहोश होकर नीचे गिर जायेगा। फिर वह व्यक्ति जिन्दा रहेगा या नहीं, इसके बारे में कहना मुश्किल है। अब यह खबर पहलवान के पास पहुंच गई। आज भी लोगों का विश्वास है कि उन दिनों भी लोगों का विश्वास था। पहलवान साहब घबरा गये। कुश्ती का दिन आया। छोटा गांव था। तीन-चार हजार लोग नजदीक के गांवों से एकत्रित हुए। गांव के हिसाब से तीन-चार हजार संख्या बहुत मानी गई। नवाब साहब ने अपनी कुर्सी डाली। बीच में लाल मिट्टी से भरा मैदान था। यह लकड़ी पहलवान बड़े तरीके से मैदान के बीच में आने लगा। जैसे ही दोनों एक-दूसरे के पास आये तो लकड़ी पहलवान ने अपना हाथ सामने किया तो नवाब साहब का पहलवान पीछे हटने लगा। लकड़ी पहलवान आगे की ओर बढ़ता गया तथा दूसरा पहलवान पीछे की ओर हटता गया। लोगों ने यह विचित्र दृश्य देखा कि पहलवान आगे की ओर भाग रहा है और लकड़ी पहलवान उसका पीछा कर रहा है। यह आखों से देखी बात हमारे हरीश जी ने बताई। किसकी ताकत कितनी थी? किन्तु गलत प्रचार के कारण मेरे अन्दर ताकत नहीं, मैं बेहोश हो जाऊंगा, पहलवान होने के बाद भी वह लकड़ी पहलवान के सामने भागने लगा। आज भारत सरकार की यही हालत है। हमारे अन्दर ताकत है। अमेरिका हमारे सामने टिक नहीं सकता। लेकिन अपनी शक्ति का साक्षात्कार नहीं और इसके कारण अमेरिका जैसे देश, जिसका कोई धीरज नहीं, जिन्होंने वियतनाम जैसे देश के सामने हथियार डाल दिये थे। ऐसे गैर धीरज वाले, जहाँ के लोगों ने उपभोगवादी होने के कारण अपने आगे का तीन वर्ष का क्रेडिट कार्ड खत्म किया हुआ है। ऐसे उपभोगी लोगों के सामने हमारे राज्यकर्ता घबरा रहे हैं। आम जनता समाचार पढ़कर गुमराह होती है कि अगर अमेरिका की नहीं सुनेंगे तो हमारा क्या होगा? तो आम जनता और राज्यकर्ताओं को अपनी शक्ति का साक्षात्कार कराना है। जैसे समुन्द्र के तट पर जाने के बाद हनुमान जी अपनी शक्ति भूल गये। सोचने लगे इतना लम्बा महासागर मैं कैसे

पार कर लंका जा सकता हूँ। जामवन्त आये। जामवन्त ने कहा, अरे हनुमान तुम तो वही हो कि जिसने जन्म लेते ही भूख के कारण सूर्य को लड्डू समझकर सूर्यबिम्ब पर उड़ान ली थी। ऐसी याद दिलाई। हनुमान जी को अपनी शक्ति की याद आई और वे समुन्द्र लाँघ गये। आज भारतीय किसान संघ ने आम जनता के लिए और राज्यकर्ताओं के लिए जामवंत का कार्य करने की आवश्यकता है। यदि आपने यह कार्य किया तो मैं आपको बताता हूँ कि थोड़े ही समय में जनता को साक्षात्कार होगा। यह यदि हुआ तो इनके जो नापाक इरादे हैं, यह विफल हो जायेंगे। गैर गोरे देश अपने इरादों में सफल हो जायेंगे। गैर गोरे देश गोरे देशों को मात दे देंगें, कहेंगे कि विश्व व्यापार संगठन में हम तब तक रहेंगे जब तक हमें समानता का व्यवहार मिल रहा है। यदि समानता का व्यवहार नहीं मिला तो सभी विकासशील देश विश्व व्यापार संगठन से बाहर आकर अपना अलग ग्रुप बनाते हुए गोरे देशों को तंग करेंगे। ऐसी घोषणा करेंगे। उनके सामने गोरे देश टिक नहीं सकते। यह बात आपको ध्यान में रखनी चाहिए। यह साक्षात्कार राज्यकर्ताओं को जनता द्वारा करा देना। यह जिम्मेदारी ऐसे देशभक्त संगठनों की है जैसे भारतीय किसान संघ है, भारतीय मजदूर संघ हैं। आने वाले दिनों में विदेशी आक्रमण बड़ी तेजी से आगे आ रहा है, उतने ही तेजी से हमने यदि अपने जनजागरण का कार्य तेजी से बढ़ाया, इन सब बातों को दुरुस्त किया जा सकता है। इस आत्मविश्वास के साथ हम यहां से जायें इतना ही कहना इस समय पर्याप्त है।

॥वन्दे मातरम्॥

"मनुष्य के लिए गाय सब दृष्टि से पालनीय है। गाय से अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष, इन चारों पुरूषार्थों की सिद्धि होती है। आज के अर्थ प्रधान युग में तो गाय अत्यन्त ही उपयोगी है। गोपालन से गाय के दूध, घी, गोबर आदि से धन की वृद्धि होती है। हमारा देश कृषिप्रधान है। यहां खेती में जितनी प्रधानता गायों और बैलों की है उतनी प्रधानता अन्य किसी की भी नहीं।"

- स्वामी रामसुखदास